बाबाजी की अमर कथा

सातवॉ अध्याय

''जय बाबे दी''

बाबाजी धौलगिरी पर्वत की गुफा में धूना लगाकर ईश्वर भक्ति में लीन हो गये । उधर माँ रत्नो की गउंऐ बाबाजी के लिये बहुत उदास हो गयी थी, और उन्होने घास खानी भी छोड दी थी, और रत्नों भी बाबाजी को पर्वत के खण्डरों में ढूंढती रही । माँ रत्नों ने बडी कोशिश की परन्तु बाबाजी कहीं नजर नहीं आये । एक दिन बाबाजी ने माँ रत्नों को सपने मे दर्शन दिये और कहा माता जी हम प्रभु भक्ति में लीन हो गये हैं ।

आपको जब कभी भी कष्ट आये तो हमारे नाम का रोट बनाकर बांट देना । फिर तुम्हारे सर्व कार्य सिद्ध हो जायेगे । माई रत्नों को बाबाजी ने सपने मै जैसा कहा था उन्होने वैसा ही किया । बाबाजी की कृपा द्वारा माँ रत्नों के सभी कार्य सिद्ध होने लगे और गउंऐ भी घास चरने लगी ।

लेकिन माँ रत्नो बाबाजी के दर्शन के लिये व्याकुल रहती थी ।वह नित्य बाबाजी को पहाडो जंगलो खण्डरो में ढूढती रहती थी । यह देखकर बाबाजी ने माँ को सपने में फिर दर्शन दिये और कहने लगे कि माताजी हमारे द्वार पर जो भी भक्तजन आयेगे वे पहले अपने स्थान शाहतलाई में आपके मन्दिर में माथा टेकेंगे । फिर वे मेरी गुफा पर आयेंगे । तभी उनकी यात्र पूर्ण होगी ।

चकमोहो गांव तहसील बडसर जनपद हमीर पुर हिमाचल प्रदेश संख्यात वंश का एक ब्राहमण भक्त बनारसी दास धौलगीरी पर अपनी गायो–भैसों को चराने के लिये लाया करता था । एक दिन बाबाजी ने दया रूप होकर इसको प्रत्यक्ष दर्शन दिये भक्त बाबाजी के दर्शन पाकर अती प्रशन्न हुआ । बाबाजी ने इसको बहुत गुण–ज्ञान कि कथाये सुनाई एक दिन बाबाजी ने बनारसी दास से दूध मांगा तो बनारसी दास ने कहा मेरी सभी गाये–भैसे आसर है अभी दुध देने के लायक नहीं हुई है बाबाजीने कहा तुम्हारी गाये–भैसे कहॉ है मुझे चलकर दिखाओं बनारसी दास ने कहा पास ही वट वृक्ष के नीचे खडी है ।

जब बाबाजी और बनारसी दास गायो–भौसो कि तरफ गये तो उन्हे शेर चीत दिखे बनारसी दास यह देखकर घबरा गया कि शेर और चीतो ने मेरी गाये–भौसे खा ली होगी । जब बाबाजी और बनारसी दास वट वृक्ष के नीचे पहुॅचे तो शेर और चीतो ने तब बाबाजी के चरणों में प्रणाम करनके लेट गये । बाबाजी ने बनारसी दास से कहां अपनी गायो–भैसों को आवाज लगाओं तब बनारसी दास ने गायो–भैसों को आवाज लगाई तो सारी गाये–भैसे बाबा जी के चरणों के पास खडी हो गयी ।

तब बाबाजी ने सारी गायों–भैसो की पीठ पर एक–एक थपकी लगायी तो वे सब फिर दूध देने लगी और बनारसी दास से कहां कि अब ये सभी गाये–भैसे हमेशा ही दूध देती रहेगी । इसके अलावा बाबाजी ने बनारसी दास कोऔर भी चमत्कार दिखाये और बाबाजी के चमत्कार देखकर वह बडा प्रसन्न हुआ और बाबाजी का सेवक बन गया । बाबाजी बनारसी दास का पूर्ण प्रेम देखकर कहने लगे अब गुफा मे प्रभु भक्ति करेगें और तुम मुझे वचन दो कि तुम और तुम्हारा वंश मेरी पूजा करोगे । बनारसी दास ने बाबाजी को

प्रणाम करते हुये कहॉ मै और मेरा वंश तम्हारी पूजा करते रहेगे बाबाजी ने प्रसन्न होकर यह वरदान दिया कि तुम और तुम्हारे वंश को इस धूने कि एक चुटकी विभूती ही भक्तो को देनी है और अरदास विनती जो भी अपने मुख से वचन कहोंगे वह सत्य हो जाये करेगे । बाबाजी ने जैसे कहां, भक्त बनारसी दास ने वैसा ही किया और प्रेमी भक्तो के कार्य सिद्ध होने लग पडे, सो इसी तरह बाबाजी कि महिमा का प्रचार धीरे–धीरे बढने लगा । चुकि बाबाजी आजीवन ब्रहमचारी रहे है । तो उनकी गुफा के द्वार पर महिलाओं का जाना वर्जित है ।

''बोलो सांचे दरबार की जय''

''जय बाबे दी''